लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

31/10/2022
PANKAJ
Page No.:
Date : / /

(1.) आपातकाल की पृष्ठभूमि :—

⇒ सन् 1967 के बाद से भारतीय राजनीति में जो बदलाव आ रहे थे। इंदिरा गाँधी एक मजबूत नेता थी और उनकी लोकप्रियता अपने चरम पर थी।

⇒ सर्वोच्च न्यायलय ने सरकार की कई पहलकदमियों को संविधान के विरुद्ध माना।

⇒ कांग्रेस की टूट से इंदिरा गाँधी और उनके विरोधियों के बीच मतभेद गहरे हो गए थे।

(i) आर्थिक संदर्भ :—

⇒ 1971 के चुनाव में कांग्रेस ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था। बहरहाल 1971-72 के बाद के सालों में भी देश की आर्थिक दशा में खास सुधार नहीं हुआ।

⇒ बांग्लादेश संकट के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ पड़ा था।

⇒ 1973 में चीजों की कीमतों में 23 फीसदी और 1974 में 30 फीसदी इज़ाफा हुआ।

⇒ 1972-73 में मानसून असफल रहा। इससे कृषि की पैदावार में भारी गिरावट आई। खाद्यान्न का उत्पादन 8% कम हो गया।

⇒ कुछ मार्क्सवादी समूहों (नक्सलवादी) की सक्रियता भी इस अवधि में बढ़ी।

PANKAJ
Page No.:
Date: / /

(ii) गुजरात और बिहार के आन्दोलन :—

⇒ 1974 के जनवरी माह में गुजरात के छात्रों ने खाद्यान्न, खाद्य तेल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमत तथा उच्च पदों पर जारी भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया।

⇒ ऐसे में गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। कांग्रेस (ओ) के प्रमुख नेता मोरारजी देसाई ने कहा कि अगर राज्य मे नए सिरे से चुनाव नही करवाए गए तो मैं अनिश्चित-कालीन भूख-हड़ताल पर बैठ जाऊँगा।

⇒ 1975 में जून में विधानसभा के चुनाव हुए। कांग्रेस इस चुनाव में हार गई।

⇒ 1974 के मार्च माह में बढ़ती हुई कीमतों, खाद्यान्न का अभाव बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के खिलाफ छात्रों ने बिहार में आंदोलन छेड़ दिया।

⇒ इस आंदोलन का नेतृत्व जयप्रकाश नारायण (जेपी) ने किया। इन्होंने कांग्रेस को बर्खास्त करने की माँग की तथा सम्पूर्ण क्रान्ति का आह्वान किया।

★ बिहर के आन्दोलन का नारा —
"सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है
भावी इतिहास हमारा है।"

★ "इंदिरा इज इंडिया, इंडिया इज इंदिरा"

→ कांग्रेस अध्यक्ष डी. के. बरुआ ने 1974 में यह नारा दिया था।